डेढ़ टन का महापक्षी!

चीन के एक मरुस्थली इलाके में चीनी शोधकर्ताओं को डायनासौरनुमा विशालकाय पक्षी के जीवाश्म मिले हैं। इन जीवाश्मों के अध्ययन के बाद दावा किया गया है कि इसने सबसे वजनी पक्षी होने के पुराने सारे रिकार्ड ध्वस्त कर दिए हैं। अब तक 'शिंटर्स थंडरबर्ड' सबसे विशाल पक्षी माना जाता था जो विलुप्त हो चुका है। इसका वज़न500 किलोग्राम तक होता था। अब जिस पक्षी के जीवाश्म मिले हैं, उसका वज़न 1400 किलोग्राम आंका गया है। इस नई खोज ने उस धारणा को भी गलत साबित कर दिया है कि आकार बढ़ने के साथ-साथ पक्षी जैसी विशेषताएं भी खत्म होती जाती हैं। इस पक्षी के ये जीवाश्म करीब साढ़े आठ करोड़ साल पुराने माने जा रहे हैं।

नेचर पत्रिका में प्रकाशित जानकारी के अनुसार इस पंखदार डायनासौर की लंबाई 8 मीटर और कूल्हे तक की ऊंचाई 3.5 मीटर तक होगी। यह मौजूदा सबसे भारी पक्षी से 300 गुना अधिक वज़नी होता था।

बीजिंग स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ वर्टीब्रेट पैलिओंटोलॉजी एंड पैलिओएंथ्रोपोलॉजी में वैज्ञानिक जिंग जू ने इन जीवाश्मों की खोज की है। वे बताते हैं कि गाइगेंटोरैप्टर नामक इस पक्षी की भुजाएं लंबी और पैर पक्षी की तरह रहे होंगे। साथ ही दंतविहीन जबड़ा और संभवतः चोंच भी होगी। हालांकि इस प्राणी के पंख होने के साफ प्रमाण नहीं मिले हैं, लेकिन इसमें उन अन्य विशालकाय जीवों से काफी समानता पाई गई हैं, जिनके पंख होते थे। इसी आधार पर माना जा रहा है कि इसके भी पंख रहे होंगे और इस प्रकार यह दुनिया का सबसे विशालकाय पक्षी होगा।

इन जीवाश्मों की खोज की कहानी भी बड़ी रोचक व नाटकीय है। कुछ समय पहले गोबी के रेगिस्तान में दुर्लभ प्रजाति के सौरापॉड के जीवाश्म पाए गए थे। एक जापानी डाक्युमेंट्री फिल्म के लिए जिंग जू को उसी स्थल पर खुदाई करते हुए और सौरापॉड के जीवाश्म की खोज करते हुए दिखाया जाना था। जैसे ही जिंग ने उस स्थान की मिट्टी को हटाकर एक जीवाश्म को हाथ में लिया, उन्हें अहसास हुआ कि वह जीवाश्म तो सौरापॉड का नहीं है। वह सौरापॉड के जीवाश्म से काफी बड़ा था। उन्होंने तत्काल फिल्मांकन रुकवा दिया। बाद में जिंग और उनके साथियों को उसी स्थान पर गाइगेंटोरैप्टर के अग्र व पश्च भाग की लगभग सभी हड्डियां, निचला जबड़ा और रीढ़ की कुछ हड्डियां मिलीं।

इस विशालकाय पक्षी की खानपान की आदतों के बारे में दुविधा की स्थिति है। इसके सिर व गर्दन एक शाकाहारी की तरह हैं, लेकिन मज़बूत जबड़ा मांसाहार का आभास देता है। एक अन्य रोचक पहलू यह भी है कि इसकी रीढ़ की हड्डी में एक बड़ा-सा छिद्र भी पाया गया है। इसका क्या मकसद रहा होगा, पता नहीं चल पाया है।

जिंग व उनके साथियों ने यह पता लगाने के लिए कि मृत्यु के समय इस पक्षी की उम्र क्या रही होगी, उसकी एक हड्डी में चीरा भी लगाया। इससे पता चला कि उसकी मौत 11 साल की उम्र में हुई थी। जिंग का मानना है कि विशाल आकार के बावजूद यह पक्षी युवा ही था। इसके आधार पर वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इससे बड़ी उम्र के पक्षी और भी विशालकाय रहे होंगे। लेकिन कितने विशालकाय रहे होंगे, इसका पता तो उनके जीवाश्मों के मिलने के बाद ही चल पाएगा। ***(स्रोत फीचर्स)***